

प्रोजेक्ट चीता और रेडियो कॉलर संक्रमण

प्रलिस के लिये:

[चीता पुनः वापसी योजना](#), [कूनो-पालपुर राष्ट्रीय उद्यान \(KNP\)](#), [गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य](#)

मेन्स के लिये:

भारत में चीता स्थानांतरण से संबंधित चुनौतियाँ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के मध्य प्रदेश स्थिति [कूनो वन्यजीव अभयारण्य](#) में [चीता पुनः वापसी परियोजना](#) के तहत उपयोग किये जाने वाले [रेडियो कॉलर](#) के कारण [चीतों की गर्दन पर घाव और सेप्टीसीमिया](#) (बैक्टीरिया द्वारा रक्त का संक्रमण) के मामले देखे गए।

- इस स्थितिको देखते हुए भारत और अफ्रीका में कॉलर की प्रथाओं से सुपरचिति विशेषज्ञ काफी चतिति हैं।

रेडियो कॉलर:

परचिय:

- रेडियो कॉलर का उपयोग [जंगली पशुओं पर नज़र बनाए रखने और अनुवीक्षण के लिये](#) कयि जाता है।
- यह [छोटे रेडियो ट्रांसमीटर लगा कॉलर](#) होता है।
- यह कॉलर [पशुओं के व्यवहार, प्रवासन और जनसंख्या की गतशीलता संबंधी डेटा प्रदान करने में काफी सहायता करता है।](#)
 - अतरिकित जानकारी के लिये इनमें GPS अथवा एक्सेलेरोमीटर का भी उपयोग कयि जा सकता है।
- कॉलर का डज़ाइन इस प्रकार कयि गया है कवि पशुओं के लिये उपयोग में [हल्के और आरामदायक हों।](#)
- ऐसे में कसि भी प्रकार के चोट अथवा संक्रमण जैसे संभावति जोखमिों और चुनौतियों पर वचिर कयि जाने की आवश्यकता है।

रेडियो कॉलर से संबंधित चुनौतियाँ:

- [गर्दन के घाव और सेप्टीसीमिया:](#)
 - [कूनो अभयारण्य में दो चीतों](#) की रेडियो कॉलर से गर्दन पर घाव के कारण होने वाले [संदिग्ध सेप्टीसीमिया की वजह से](#) मौत हुई है।
 - ओबन, एल्टन और फ्रेडी सहति और भी चीतों में इसी प्रकार की चोट/जखम देखे गए हैं।
 - इन असफलताओं ने चीता पुनः वापसी परियोजना में रेडियो कॉलर के उपयोग के बारे में चतिारें बढ़ा दी हैं।
- [लंबे समय तक कॉलर के उपयोग से जुड़ी समस्याएँ:](#)
 - लंबे समय तक शरीर पर कुछ पहनने या बाँधे रखने से उसके गलत प्रभाव हो सकते हैं, जैसे कघिड़ी पहनने वालों और पालतू कुत्तों पर कयि गए अध्ययनों में देखा गया है।
 - घड़ी पहनने वालों की कलाई पर [स्टैफिलोकोकस ऑरयिस \(Staphylococcus Aureus\)](#) बैक्टीरिया की उपस्थति अधिकि थी, जसिसे सेप्सिस या मृत्यु हो सकती है।
 - कॉलर पहनने वाले कुत्तों में [एक्यूट मोइस्ट डर्मेटाइटिस \(Acute Moist Dermatitis\)](#) या [हॉट स्पॉट्स विकसति हो सकते हैं, जो कटिक्स या पसिसू के कारण बढ़ जाते हैं।](#)
 - टाइट-फटिगि कॉलर [बेडसोर के समान दबाव परगिलन \(Pressure Necrosis\)](#) और गर्दन के चारों ओर तेज़ी से बाल झड़ने का कारण बन सकते हैं।
- [वज़न संबंधी वचिर:](#)
 - वशिव स्तर पर सामान्य दशिा-नरिदेश के अनुसार, [रेडियो कॉलर का वज़न पशु के शरीर के वज़न से 3% से कम रखना होता है।](#)
 - जंगली बलिलियों के लिये आधुनकि कॉलर का वज़न आमतौर पर [लगभग 400 ग्राम](#) होता है, जो 20 कलोग्राम से 60 कलोग्राम वज़न वाले चीतों के लिये उपयुक्त है।
 - हालाँकि चीतों को कॉलर पहनाना उनकी छोटी गर्दन के कारण चुनौतीपूर्ण हो सकता है, [खासकर छोटे पशुओं के लिये।](#)

- कॉलर से होने वाले जख्मों के प्रति संवेदनशीलता:
 - चीतों की शीतकालीन खाल, जो बाघों या तेंदुओं की तुलना में अधिक मोटी और रोएँदार होती है, अधिक नमी बनाए रख सकती है तथा सूखने में अधिक समय लेती है।
 - वर्ष 2020 के एक अध्ययन में पशुओं की बेहतर शारीरिक कृषमता (Athleticism) पर विचार न करने के लिये कॉलर वज़न नियम की आलोचना की गई थी, जिससे पता चला कि रेडियो कॉलर के कारण लगने वाला बल उनकी गतिविधियों के दौरान गर्दन (Collar) के वज़न से अधिक हो सकता है।
 - उदाहरण के लिये रेडियो कॉलर द्वारा लगाया गया बल आमतौर पर शेर की गर्दन के वज़न का पाँच गुना और चीते की गर्दन के वज़न का 18 गुना तक पाया गया।
 - भारतीय बाघों और तेंदुओं की तुलना में अफ्रीकी चीते स्थानीय रोगजनकों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं, संभवतः प्रतिरक्षा और पर्यावरणीय स्थितियों में अंतर के कारण।
- मानसून की स्थितियों के प्रति अनुकूलन का अभाव:
 - बारिश के बीच शुष्क त्वचा के कारण अफ्रीकी परस्थितियों में कॉलर के नीचे जीवाणु संक्रमण को आमतौर पर रिपोर्ट नहीं किया जाता है।
 - ऐतिहासिक समय में भारत में मानसून के दौरान चीतों को कॉलर नहीं पहनाया जाता था और हो सकता है कि उन्होंने स्थानीय जलवायु के अनुसार अलग तरह से अनुकूलन किया हो।
- पुनः वापसी परियोजना हेतु नहितार्थ:
 - गर्दन की चोटों के लिये चीतों को ट्रैक करना, स्थिर करना और उनका आकलन करना चुनौतियों तथा संभावित देरी का कारण बनता है।
 - अगले मानसून के लिये स्पष्ट रोडमैप की अनुपस्थिति चीतों की री-कॉलरिंग और उनके कल्याण के विषय पर सवाल उठाती है।

भारत में चीता पुनः वापसी परियोजना:

■ परिचय:

- भारत में चीता पुनः वापसी परियोजना औपचारिक रूप से 17 सितंबर, 2022 को प्रारंभ हुई, जिसका उद्देश्य चीतों की आबादी को बहाल करना था, जिन्हें वर्ष 1952 में देश में विलुप्त घोषित कर दिया गया था।
- इस परियोजना में दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया से मध्य प्रदेश के कुनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों का स्थानांतरण शामिल है।

■ पुनः वापसी प्रक्रिया:

- 20 रेडियो-कॉलर वाले चीतों को दक्षिण अफ्रीका (12 चीते) और नामीबिया (8 चीते) से कुनो नेशनल पार्क में स्थानांतरित किया गया।
 - मार्च 2023 में भारत ने नामीबिया से स्थानांतरित आठ चीतों में से एक ने 4 शावकों के जन्म दिया।
- चीतों को एक क्वारंटाइन अवधि से गुजरना पड़ा और फिर उन्हें बड़े अनुकूलन बाड़ों में स्थानांतरित कर दिया गया।
- वर्तमान में 11 चीते स्वतंत्र अवस्था में हैं और एक शावक सहित 5 चीते क्वारंटाइन बाड़ों में हैं।
- समर्पित नगिरानी दल स्वतंत्र रूप से घूमने वाले चीतों की चौबीसों घंटे नगिरानी सुनिश्चित करते हैं।

■ मृत्यु-दर:

- कुनो नेशनल पार्क में प्राकृतिक कारणों से 8 चीतों की मौत हो गई राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) के प्रारंभिक विश्लेषण से संकेत मिलता है कि मौतें प्राकृतिक थीं तथा ये रेडियो कॉलर जैसे अन्य कारकों से संबंधित नहीं थीं।

■ परियोजना कार्यान्वयन एवं चुनौतियाँ:

- इस परियोजना को NTCA द्वारा मध्य प्रदेश वन विभाग, भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) के साथ नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका के चीता विशेषज्ञों के सहयोग से कार्यान्वित किया गया है।
- इस परियोजना की चुनौतियों में पुनः स्थापित चीता आबादी की नगिरानी, सुरक्षा और प्रबंधन शामिल है।

■ संरक्षण के प्रयास और उपाय:

- चीते की मौत के कारणों की जाँच के लिये अंतरराष्ट्रीय चीता विशेषज्ञों तथा दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया के पशु चिकित्सकों के साथ परामर्श जारी है।
- स्वतंत्र राष्ट्रीय विशेषज्ञ नगिरानी प्रोटोकॉल, सुरक्षा स्थिति, प्रबंधकीय दिशा-निर्देश, पशु चिकित्सा सुविधाओं, प्रशिक्षण एवं कृषमता निर्माण की समीक्षा कर रहे हैं।
- चीता अनुसंधान केंद्र स्थापित करने, कुनो राष्ट्रीय उद्यान के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत वन क्षेत्रों का विस्तार करने, अतिरिक्त फरंटलाइन कर्मचारी प्रदान करने, चीता संरक्षण बल स्थापित करने तथा गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य में चीतों के लिये दूसरा आवास स्थल बनाने के प्रयास चल रहे हैं।
- सरकार पुनः स्थापित चीता आबादी के संरक्षण तथा इसकी दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित करने के लिये प्रतिबद्ध है।

चीता (Cheetah)



सामान्य नाम: एशियाई चीता

वैज्ञानिक नाम: एसिनोनिक्स जुबेटस (*Acinonyx jubatus*)

- ❖ एसिनोनिक्स जुबेटस जुबेटस (एशियाई चीता)
- ❖ एसिनोनिक्स जुबेटस वेनाटिकस (अफ्रीकी चीता)

विशेषताएँ:

- ❖ विश्व का सबसे तेज दौड़ने वाला स्तनधारी
- ❖ चीते अपनी क्षमता के बजाय गति के लिये जाने जाते हैं; जब ये अपने शिकार का पीछा करते हैं तो यह केवल **200-300** मीटर के लिये तथा **1** मिनट से कम अवधि का होता है।
- ❖ शेर, लकड़बग्घे और तेंदुए जैसे अन्य शक्तिशाली शिकारियों से प्रतिस्पर्धा से बचने के लिये चीते मुख्य रूप से दिन के दौरान शिकार करते हैं।

अफ्रीकी चीता बनाम एशियाई चीता:

- ❖ **अफ्रीकी:** हल्के भूरे और सुनहरे रंग की त्वचा; एशियाई चीते से मोटी
 - ❖ चेहरों पर धब्बों तथा रेखाओं की प्रधानता
 - ❖ पूरे अफ्रीका महाद्वीप में पाए जाते हैं
 - ❖ **IUCN रेडलिस्ट में स्थिति: सुभेद्य (Vulnerable)**
- ❖ **एशियाई:** अफ्रीकी चीतों से थोड़े छोटे
 - ❖ हल्के पीले रंग की त्वचा: शरीर के नीचे विशेष रूप से पेट पर अधिक बाल
 - ❖ केवल ईरान में पाए जाते हैं; देश द्वारा यह दावा किया जाता है कि अब यहाँ केवल **12** चीते शेष हैं।
- ❖ **वर्ष 1952:** एशियाई चीता को आधिकारिक रूप से भारत से विलुप्त घोषित किया गया
 - ❖ **IUCN रेडलिस्ट में स्थिति: घोर संकटग्रस्त (Critically Endangered)**



एशियाई चीता



अफ्रीकी चीता

भारत में चीतों का पुनर्वास:

- ❖ राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की 19वीं बैठक में MoEF-CC द्वारा “भारत में चीता पुनर्वास के लिये कार्ययोजना” जारी की गई थी। (जनवरी 2022)
 - ❖ इसी तरह की एक कार्ययोजना सर्वप्रथम वर्ष **2009** में प्रस्तावित की गई थी।
- ❖ सितंबर **2022** में नामीबिया से आठ चीतों को भारत में पुनर्वास हेतु लाया गया।
 - ❖ इन आठ चीतों को मध्यप्रदेश के कुनो-पालपुर राष्ट्रीय उद्यान में स्थानांतरित किया जाएगा।
- ❖ नामीबिया से भारत में चीतों का स्थानांतरण विश्व भर में किसी बड़े मांसाहारी जानवर की पहली स्थानांतरण परियोजना है।

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति पर वचिर कीजयि: (2012)

1. काली गरदन वाले सारस
2. चीता
3. उड़न गलिहरी
4. हमि तेंदुआ

उपर्युक्त में से कौन-से भारत में प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 1, 3 और 4
- (c) केवल 2 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (b)

स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/project-cheetah-and-radio-collar-infections>

